मौत, बत्तख और ट्यूलिप

वुल्फ़ एर्लब्रुख़

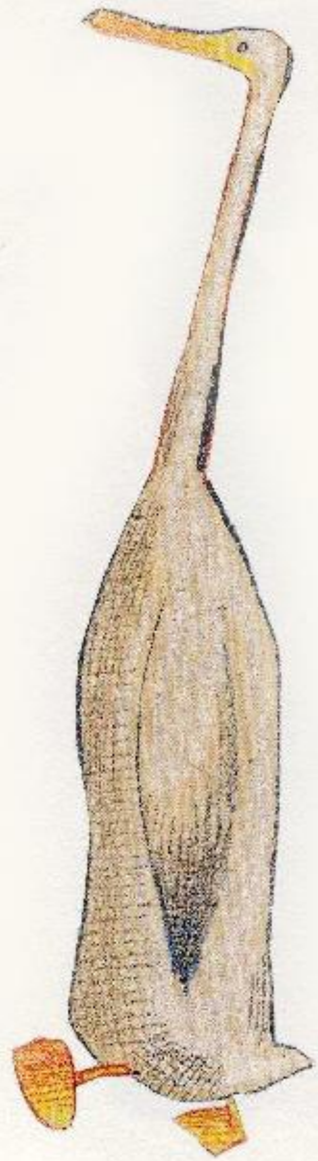


मौत, बत्तख और ट्यूलिप

वुल्फ़ एर्लब्रुख़

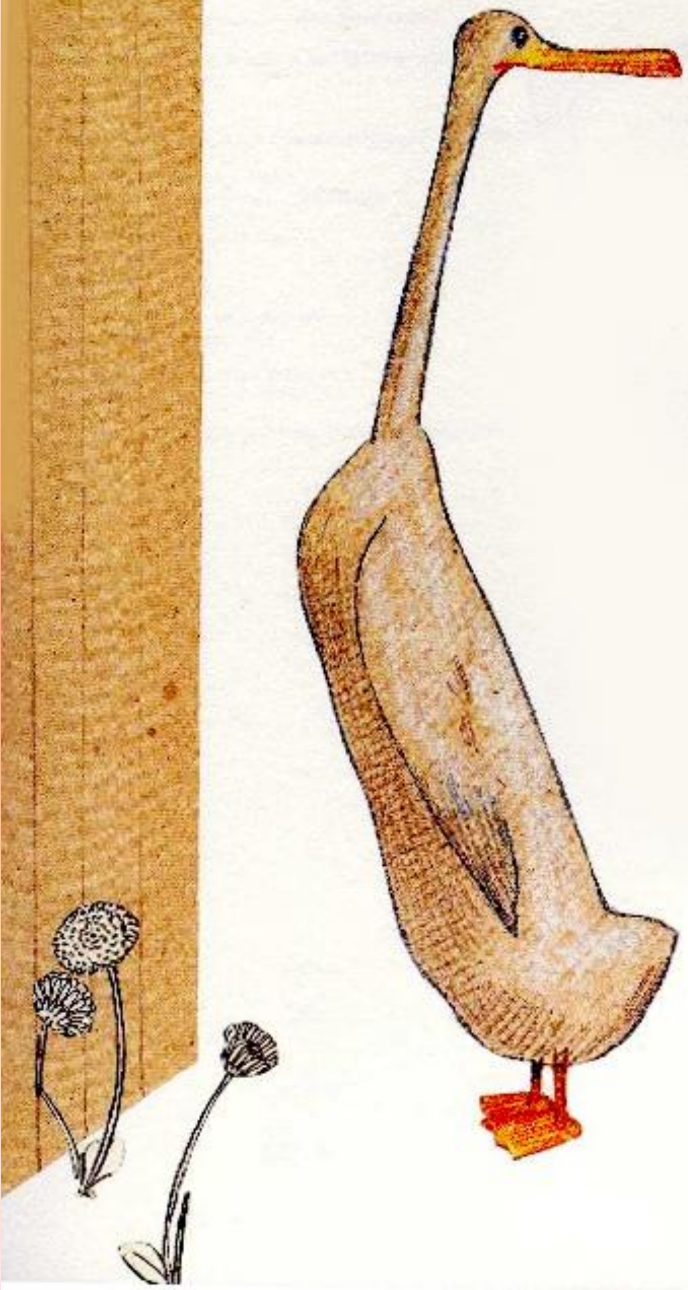






कुछ समय से बत्तख को एहसास हो रहा था।

“कौन हो तुम? चुपके-चुपके मेरा पीछा क्यों कर रहे हो, क्या चाहिए तुम्हें?”



“शुक्र है,” मौत ने कहा, “तुमने आखिर मुझ पर ध्यान तो दिया। मैं मौत हूँ, मृत्यु।“



बत्तख बहुत डर गई। और उसकी गलती भी नहीं थी। कोई भी डर जाता। “तुम मुझे लेने आई हो?”



“बिल्कुल। और मैं तो पूरा जीवन ही तुम्हारे आस-पास थी, अगर अचानक कभी..“

“अचानक कभी क्या?” बत्तख ने पूछा।



“कभी तुम्हें कुछ हो जाए तो.. सर्दी, कोई दुर्घटना..
कुछ पता थोड़े ही होता है।“

“क्या तुम कुछ करवाने वाली हो?”



“ये सब तो ज़िंदगी करती है.. सर्दी-खांसी और जो भी
चीज़ें तुम बत्तखों को होती हैं। जैसे, लोमड़ी।“

बत्तख ने कोशिश की कि वो उनके बारे में ना सोचे।
सोचने से ही उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे।



मौत ने उसकी तरफ़ मुस्कुरा कर देखा।

वो काफ़ी अच्छी थी, अगर आप एक पल के लिए भूल जाएँ कि वो कौन थी – सच में, काफ़ी अच्छी।



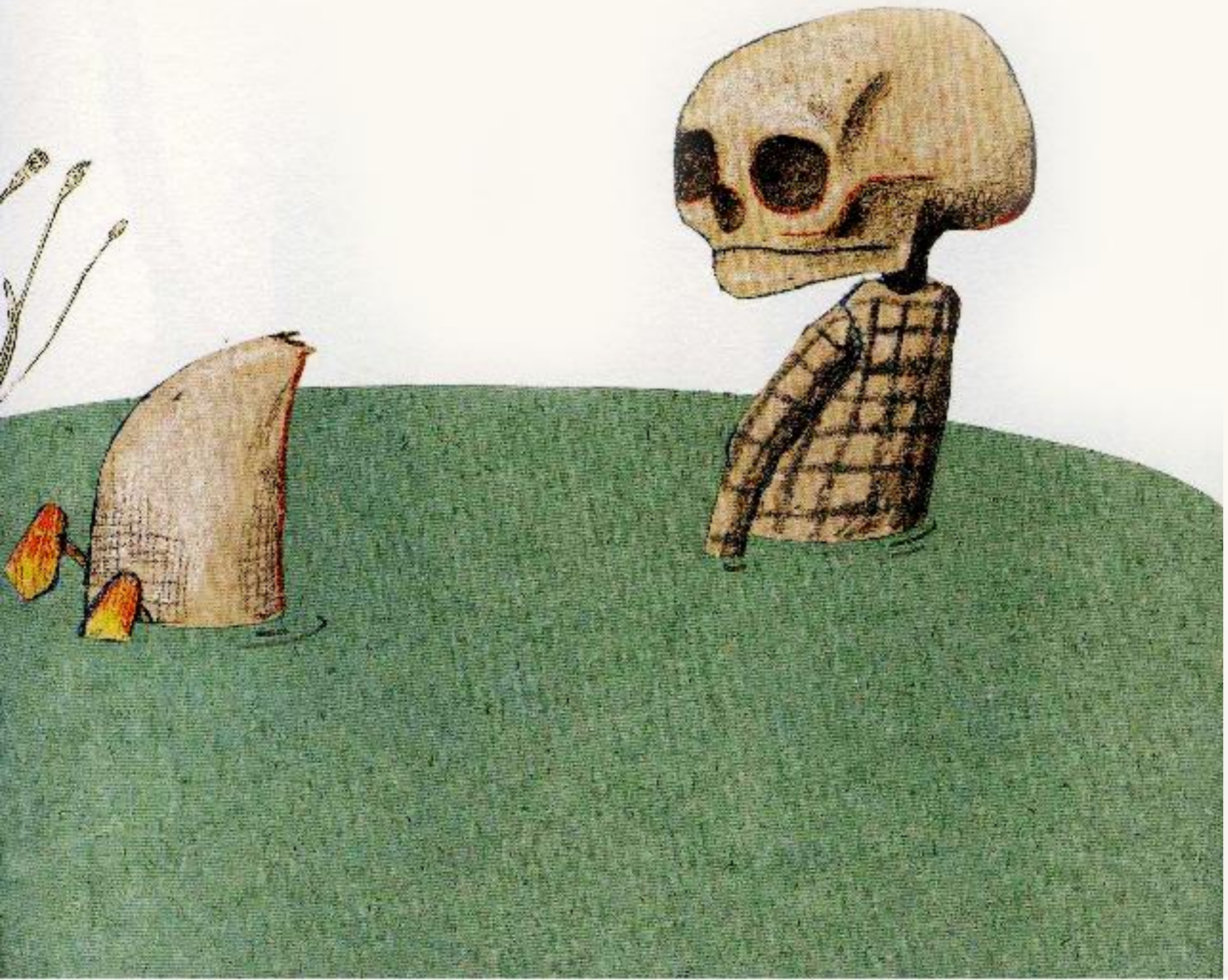
“हम नीचे तालाब तक चलें?” बत्तख ने पूछा।

मौत को इसी बात का डर था।



जल्द ही, मौत को समझ आ गया कि उसकी कुछ सीमाएँ हैं।

“माफ़ करना, लेकिन मुझे इस नमी से दूर जाना होगा।“



“क्या तुम्हें ठंड लग रही है? क्या मैं तुम्हें थोड़ा गरम कर दूँ?”

ऐसी बात मौत से पहले कभी किसी ने नहीं कही थी।



बत्तख पहले जग गई, सुबह-सुबह।

मैं मरी नहीं, उसने सोचा।



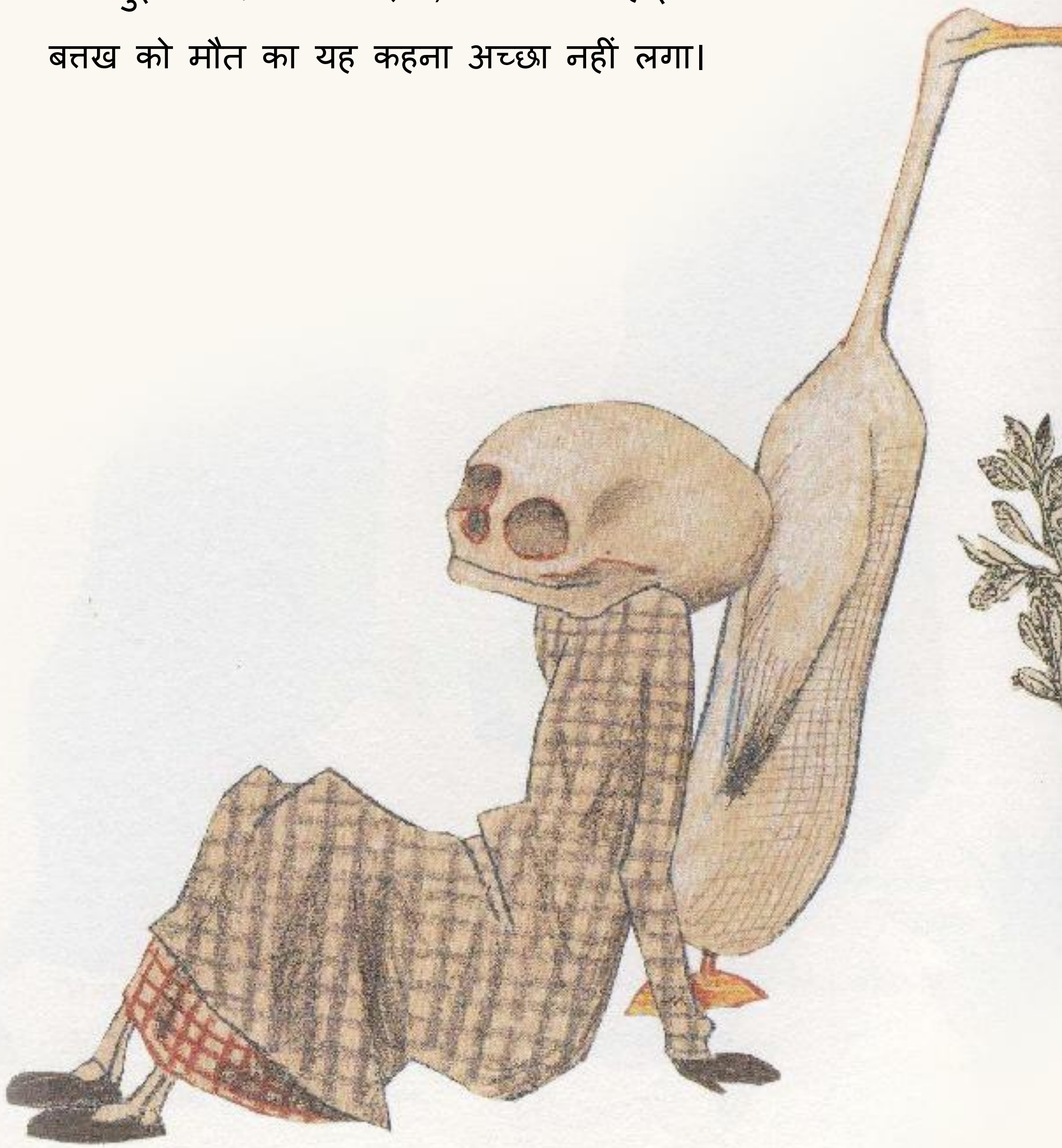
उसने खेल-खेल में मौत की पसलियों में उंगली मारी और खुशी से झूमते हुए, कहकहाई, “मैं मरी नहीं!“

“मैं तुम्हारे लिए खुश हूँ,“ मौत ने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

“और अगर मैं मर गई होती?’

“तो मुझे जल्दी उठना पड़ता,“ मौत ने जम्हाई ली।

बत्तख को मौत का यह कहना अच्छा नहीं लगा।



कुछ देर तो वो कुछ नहीं बोली, लेकिन जल्दी ही फिर से बतियाने लगी।

"कुछ बत्तख कहती हैं कि मरने के बाद परी बन जाते हैं और बादल पर बैठकर धरती को देखते हैं।"

"संभव है," मौत ने कहा, "तुम्हारे तो पहले से ही पंख भी हैं।"





"कुछ बत्तखों का कहना है कि अगर आप अच्छे काम नहीं करते, तो धरती के अंदर एक जगह है जहां आपको भूना जाता है।"

"तुम बत्तखें भी न! अजीब-अजीब कहानियाँ बनाती हो। पर कौन जाने क्या होता है?"

"तो तुम्हें भी नहीँ मालूम," बत्तख ने तल्खी से कहा।

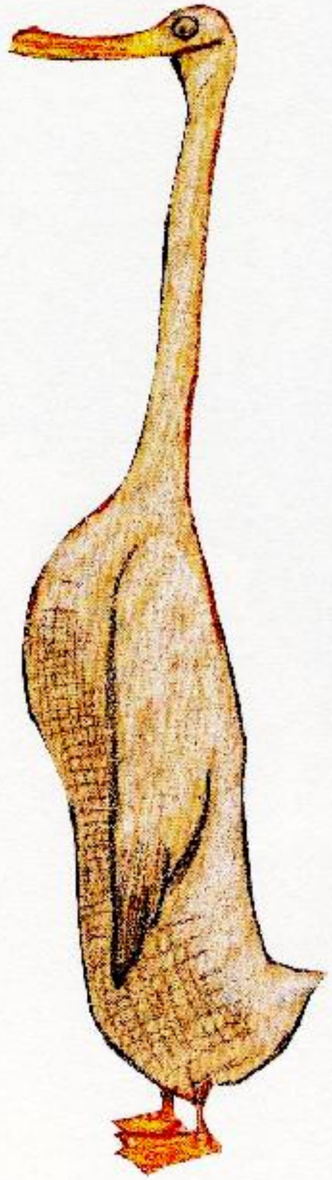
मौत ने बस उसकी तरफ देखा।

मौत ने पूछा, “आज हम क्या करेंगे?”

“चलो, आज तालाब की तरफ़ नहीं जाते।
आज कुछ बहुत ही मज़ेदार करते हैं।“

मौत को थोड़ी राहत महसूस हुई। “क्या हम पेड़ पर चढ़ें?”
उसने बत्तख को छेड़ते हुए पूछा।





उन्हें दूर नीचे तालाब दिख रहा था।

इतना शांत, इतना अकेला।

“जब मैं मर जाऊँगी, तो तलब ऐसा ही दिखेगा,”
बतख ने सोचा।

मेरे बिना, अकेला।



मौत कभी-कभार मन भी पढ़ लेती थी। “जब तुम मर जाओगी,
तालाब भी मर जाएगा - कम से कम तुम्हारे लिए तो।

“सही में, ऐसा होगा?” बत्तख ने चौंक कर पूछा।

“यकीनन,” मौत ने कहा।

“चलो, इस बात की तो तसल्ली है,
कि मुझे इस पर शोक नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि ... “

“क्योंकि तुम मर जाओगी,“ मौत ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा।
वो इस मामले में संकोची नहीं थी।

“चलो, नीचे उतरते हैं,” मौत ने कुछ समय बाद आग्रह किया,
“पेड़ों पर अजीब-अजीब ख़याल आने लगते हैं।“





गरमियाँ ख़त्म होने वाली थीं और अब वो तालाब पर कम ही जाने लगे।

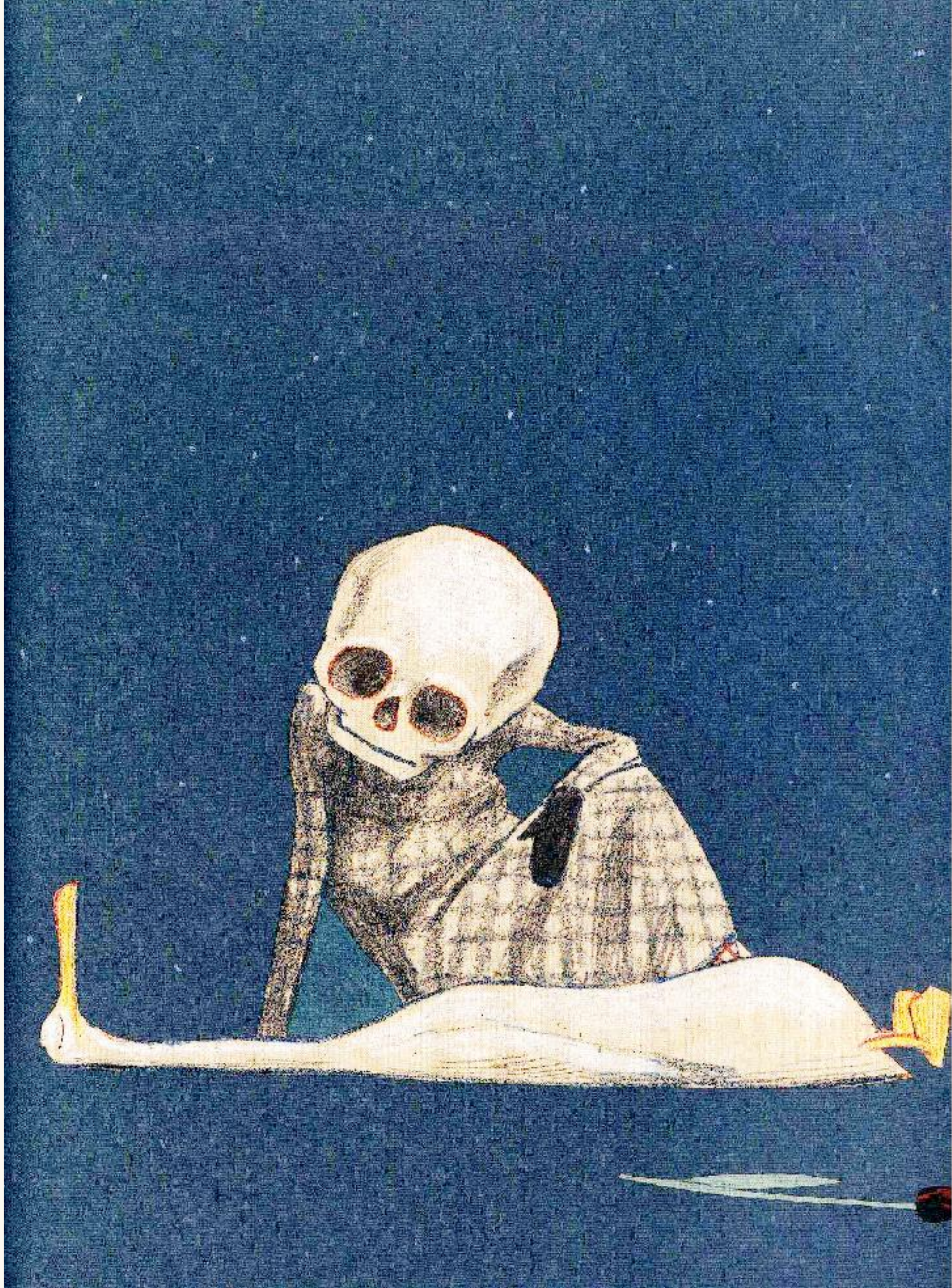
वे इकट्ठे घास में बैठते, पर बात कम ही करते।

जब ठंडी हवा ने उसके पंख सहलाए, तो बत्तख को पहली बार उसकी ठंडक का एहसास हुआ।

“मुझे ठंड लग रही है,” एक शाम उसने कहा। “क्या तुम मुझे गरम रखोगे?”



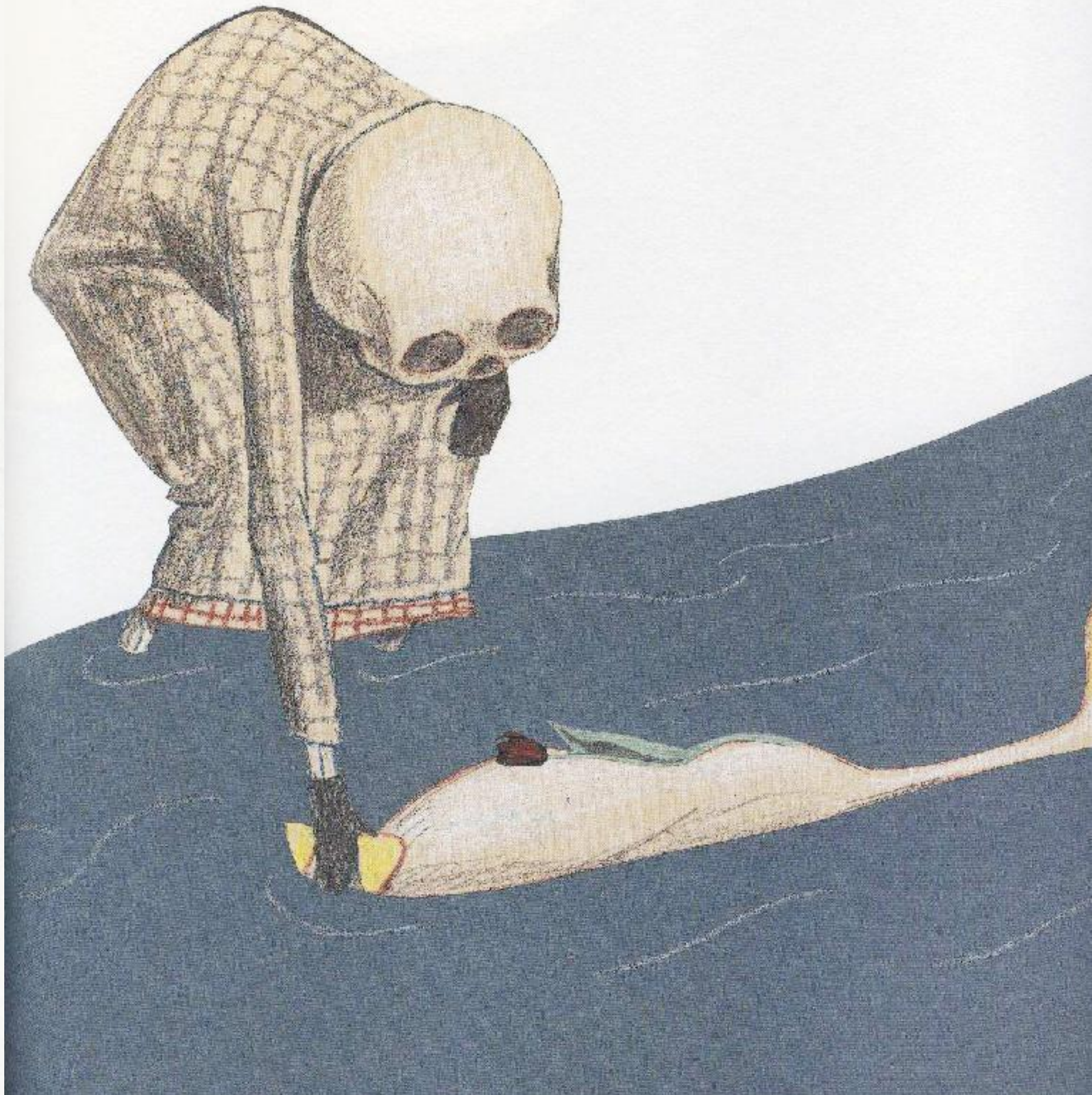
बर्फ़ के छोटे-छोटे टुकड़े नीचे उड़ कर आने लगे।
कुछ तो हुआ था। मौत ने उस बत्तख को देखा।
उसकी सांसें रुक गई थीं। वो बिल्कुल शांत लेटी थी।



मौत ने कुछ उड़े हुए पंखों को सहलाया। फिर उसे उठाकर ग्रेट रिवर यानि बड़ी नदी कि तरफ ले गई।



उसने उसे धीरे से पानी पर रखा और धीमे से धकाते हुए आगे को तैरा दिया।



काफ़ी देर तक वो उसे देखती रही।

जब वो दिखना बंद हो गई, मौत बस ज़रा सी भावुक हुई।

पर यही ज़िंदगी है, मौत ने सोचा।

